भगवान महावीर के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

✧ डॉ. दिलीप पीपाड़ा

भगवान महावीर को जनसामान्य एक आध्यात्म पुरुष के रूप में ही जानता है क्योंकि उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया था तथा यह माना था कि अप्रमाणिक प्रवृत्तियों से धन का अर्जन कर मनुष्य पाप कर्मों का बंधन कर लेता है एवं जो व्यक्ति दिन-रात धन में आसक्त रहता है उसे भवसागर से पार ले जाने वाला मार्ग दिखायी नहीं देता परन्तु बहुत कम ही लोगों को यह जानकारी है कि उन्होंने बहुत से ऐसे विचार भी आज के हजारों साल पूर्व व्यक्त किये थे जो आज भी अर्थशास्त्र विषय के अध्ययन के मुख्य बिन्दु हैं। भगवान महावीर के आर्थिक विचारों को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत रेखांकित किया जा सकता है-

उपभोग-वर्तमान की उपभोक्तावादी संस्कृति ने उपभोग को अनियन्त्रित कर दिया है एवं साधनों को रोजगार देने के लिये प्रभावी मार्ग में वृद्धि की अवधारणा ने उपभोक्तावाद को जन्म दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे अनेक प्राकृतिक संसाधन जल, खनिज तेल, कोयला, वन बहुत कम हो चुके हैं व अनेकों खनिज तो विलुप्ति के कगार पर आ खड़े हुए हैं, ऐसे समय विवेकपूर्ण उपभोग की अवधारणा दी जा रही है जबकि भगवान महावीर ने अपने अपरिग्रह के सिद्धान्त में उपभोग की एक ऐसी सूची बनायी थी जो आज तक किसी अर्थशास्त्री के द्वारा नहीं बनायी गयी। उस सूची में उन्होंने वस्त्र, जल, वाहन, अन्न आदि को परिमाण किया जाना आवश्यक बतलाया था। उनके वस्त्र परिमाण में आवश्यकता से अधिक वस्त्रों का संग्रह नहीं करना, जल परिमाण में निश्चिम मात्रा से अधिक जल का प्रयोग नहीं करना, वाहन परिमाण में नितान्त आवश्यकता से अधिक वाहन नहीं रखना, अन्न परिमाण में निर्धारित मात्रा से अधिक अन्न का संग्रह नहीं करना जैसी महत्त्वपूर्ण चीजें सम्मिलित थीं। आज भी जैन साधु साध्वियाँ अपने श्रावकों को उक्त चीजों का परिमाण करने का आदेश देते हैं।

सही मायने में आज अति उपभोग के कारण घटते संसाधनों को देखते हुए संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की विचारधारा जो विश्व भर में चल रही है वह भगवान महावीर के विचारों का ही नया रूप कहा जा सकता है। आज सम्पूर्ण विश्व इस बात से सहमत है कि यदि अब भी हमने संसाधनों के अविवेकपूर्ण उपभोग पर नियन्त्रण नहीं लगाया तो आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत से संसाधन समाप्त हो जाएंगे।

उत्पादन-वर्तमान में तीव्र आर्थिक विकास की होड़ में हर देश अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहता है एवं इसके चलते वह प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध प्रयोग कर रहा है जिससे न केवल पर्यावरण प्रदूषण की समस्या में वृद्धि हुई है वरन् पारिस्थितिकी असन्तुलन की भी समस्या पैदा हो गयी है। अति उत्पादन की चाह में पूँजीपतियों ने श्रमिकों को कार्य से हटाकर मशीनों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया जिससे बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है। विकसित राष्ट्रों में भी बेरोजगारी तेजी से बढ़ रही है। भगवान महावीर उत्पादन में साधनों की शुद्धता के पक्ष में थे एवं बड़े पैमाने पर पूँजी के केन्द्रीकरण को गलत मानते थे अर्थात् वे बड़े-बड़े उद्योगों के स्थान पर लघु व कुटीर उद्योगों को महत्त्व देते थे जिसमें श्रम का कार्य महत्त्वपूर्ण होता था। सही मायने में देखा जाए तो वर्तमान बेरोजगारी की समस्या का समाधान भी लघु व कुटीर उद्योगों के विकास के द्वारा किया जा सकता है क्योंकि बड़े उद्योग जहाँ पूँजी प्रधान होते हैं वहीं लघु व कुटीर उद्योगों में श्रम के अधिक रोजगार के अवसर होते हैं।

इतना ही नहीं भगवान महावीर उत्पादन में विवेकपूर्णता के भी पक्षधर थे। वर्तमान में स्वयं के लाभ हेतु अफीम, भांग, चरस, गांजा, शराब, तम्बाकू, सिगरेट, पान-मसाला, हिरोईन, ड्रग्स आदि का उत्पादन कर स्वयं पैसा कमाने में लगे हैं पर इससे कितने लोगों की क्षति हो रही है इससे उनको कोई लेना-देना नहीं है, ऐसे समय भगवान महावीर के सिद्धान्त के अनुसार उत्पादन में सामाजिक लाभ की भावना को भी ध्यान में रखा जाना आवश्यक प्रतीत होता है।

विनिमय-भगवान महावीर के समय भी वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता था उन्होंने कूट तोल-माप, मिलावट व किसी की धरोहर के गबन आदि को पाप कर्म की संज्ञा दी। उन्होंने अर्थार्जन में मूल्य का ह्रास न हो इसका ध्यान रखने की प्रेरणा दी। वर्तमान में जब देश में नन्हे नौनिहालों के द्वारा पी ये जाने वाला दूध तक सिंन्थेटिक बन रहा है ऐसे समय भगवान महावीर के सिद्धान्तों के अनुसरण करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

वितरण-भगवान महावीर के समय में वितरण की कोई समस्या नहीं थी क्योंकि लोगों की आवश्यकताएँ भी कम थी व आवागमन के साधन भी कम थे। वर्तमान में विज्ञापनों ने व्यक्तियों की आवश्यकताओं को अत्यधिक बढ़ा दिया है। भगवान महावीर कहते हैं 'खणमेत्र सोक्खा बहुकाल दुक्खा' भौतिक सुख क्षणिक होते हैं जिसका परिणाम दु:खद होता है।

उद्योग-भगवान महावीर के समय लघु व कुटीर उद्योग अधिक प्रचलित थे। उन्होंने अल्पेच्छा और अल्पारंभ अर्थात् विकेन्द्रीकरण की नीति का सूत्र सामने रखा। उनके समय इंगाल कम्मे-कोयले का उपयोग, वणकम्मे-ईंधन का उद्योग, जंगलों को जलाना, खेती की भूमि बढ़ाने के लिए तालाब को सूखाना, मिट्टी के बरतन बनाना आदि उद्योग प्रचलित थे। भगवान महावीर इन उद्योगों को निरंकुश रूप में किसी एक के पास रखने के पक्ष में नहीं थे। उनका एक श्रावक उद्दालपुत्र जो कि जाति का कुम्हार था, के पास पाँच सौ

अर्थशास्त्र विभाग, सेठ मोतीलाल (स्नात्तकोत्तर) महाविद्यालय, झुंझुनूं (राज.)

दुकानें व सैकड़ों आवां थे। उन्होंने स्वयं उसे सीमाकरण का व्रत दिया था। वर्तमान में बढ़ती असमानता का अधिकांश उद्योगों पर देश के चुनिंदा औद्योगिक घरानों के प्रभुत्व को देखते हुए भगवान महावीर के उद्योग सम्बन्धित विचारों को आत्मसात करने की आवश्यकता है ताकि गरीब व मध्यम वर्ग को ऊँचा उठाया जा सके व आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण कुछ ही हाथों में न रहे।

कृषि–भगवान महावीर के समय कृषि एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय था एवं कृषि में पशुओं की सहायता ली जाती थी। वे पशुओं के साथ क्रूरता का व्यवहार, अधिक भार लादने, उन्हें मारने-पीटने, वध करने आदि को पाप मानते थे तथा कृषकों को प्रमाणिक साधनों से कृषि करने की प्रेरणा देते थे। भगवान का एक श्रावक आनन्द आर्थिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न था उसके पास हजारों एकड़ कृषि भूमि थी, चालीस हजार गायों की गौशाला थी परन्तु उसने आर्थिक विकास में अप्रमाणिक साधनों का प्रयोग न लेने का प्रण किया हुआ था।

भगवान महावीर अहिंसा प्रवर्तक होने के कारण कृषि में कीट नियन्त्रण हेतु दवाइयों के प्रयोग को उचित नहीं मानते थे। वर्तमान कृषि में दवाइयों व उन्नत खाद के प्रयोग से उत्पादन तो बढ़ा परन्तु इनके कारण मनुष्य को नई-नई बीमारियों ने जकड़ लिया है एवं अब पुनः यह महसूस किया जाने लगा है कि रासायनिक खाद एवं अत्यधिक दवाइयों का प्रयोग मानव जीवन के लिए हितकर नहीं है। इससे भगवान महावीर के साधन की शुद्धता के सिद्धान्त की पुष्टि होती है।

मनुष्यों की तीन कोटियाँ–भगवान महावीर ने मनुष्य की तीन कोटियों का उल्लेख किया था। महेच्छ वह व्यक्ति होता है जिनकी इच्छाएँ अत्यधिक होती है एवं वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अधर्म का भी सहारा लेगा। महावीर के अनुसार वह पुरुष चण्ड, क्षुद्र, वक्र, दुःशील होगा एवं अपने लाभ के लिए कुछ भी करने को तैयार होगा। वर्तमान में पैसा कमाने के लिये व्यक्तियों के द्वारा जाली खाते, रिश्वत, अपहरण, हत्या, धमकी, धोखा, बेईमानी, विश्वासघात जो कर रहे हैं उन्हें भगवान महावीर ने महेच्छा पुरुषों की संज्ञा दी थी।

उन्होंने मनुष्यों का दूसरा प्रकार अल्पेच्छा को बताया था जिसमें व्यक्ति उद्यम तो करता है परन्तु पूँजी का केन्द्रीकरण नहीं करता है। महावीर के अनुसार धम्मेणं वित्ते कप्पेमाणा-अर्थात् अल्प इच्छा वाला व्यक्ति धर्म के साथ अपनी आजीविका चलाता है। मनुष्य का तीसरा प्रकार उन्होंने इच्छाजयी बताया जो सन्यास ग्रहण कर लेता है। वर्तमान में समाज में प्रथम प्रकार के मनुष्यों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। समाज में व्याप्त अनेक अपराधों का यही कारण है। ऐसे समय में भगवान महावीर के सिद्धान्तों की व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है ताकि लोग अर्थपूर्ण आजीविका के साधनों को त्याग कर सदाचार एवं शुद्ध साधनों के माध्यम से आजीविका अर्जन कर सके।

पर्यावरण व अर्थशास्त्र–भगवान महावीर ने अपने व्रती समाज के लिये जो निर्देश दिये थे उसमें से दो निर्देश वणकम्मे-जंगलों की कटायी न हो, फोडीकम्मे-भूमि का उत्खनन न हो, को वर्तमान पर्यावरण संरक्षण के लिये अत्यन्त आवश्यक कहा जा सकता है। जैन शास्त्रों में छठे आरे का उल्लेख मिलता है जिसमें पूरी ओजोन परत समाप्त हो जाएगी व तापमान में वृद्धि होने के कारण दिन बहुत ही गर्म व रातें बहुत ही ठण्डी होंगी। उस समय समस्त प्राणी व वनस्पति के जल जाने की बात की गयी है।

बहुत हद तक ऐसी घटनाएँ प्रारम्भ भी हो चुकी है। इस साल सर्दियों में तापमान की गिरावट ने सालों के रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए हैं एवं कड़ाके की ठण्ड ने जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है एवं अब तेजी से बढ़ते हुए तापमान से फसलें असमय ही पकने लगी है। लगातार बढ़ती गर्मी से बड़े-बड़े हिमनद पिघल रहे हैं जिससे समुद्र का विस्तार हो रहा है एवं जमीन कम होती जा रही है ये सभी तथ्य भगवान द्वारा वर्णित पर्यावरण प्रदूषण के दुष्परिणामों की पुष्टि कर रहे हैं। ऐसे समय में भगवान महावीर के उपदेशों एवं सिद्धान्तों को सामाजिक जीवन में उतारने की गहन आवश्यकता है।

तीन आवश्यक निर्देश–उत्पादन में सामान्यतया अनेक वस्तुओं को सम्मिलित किया जाता है परन्तु आध्यात्म पुरुष होने के कारण भगवान महावीर ने उत्पादन के संदर्भ में तीन मुख्य निर्देश असंजुताहिकरण शास्त्रों का संयोजन नहीं करना तथा अपावसमोंवदेशे पाप कर्म व हिंसा का प्रशिक्षण न देने का उपदेश दिया था। वर्तमान अर्थशास्त्रिय दृष्टिकोण में ये उपदेश बहुत ही महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं क्योंकि वर्तमान में बढ़ते आतंकवाद के मूल में ये ही तीन मुख्य तत्त्व हैं।

अर्थशास्त्र का आधार–एक ओर जहाँ वर्तमान अर्थशास्त्र का मुख्य आधार इच्छा, आवश्यकता व मांग है एवं आधुनिक अर्थशास्त्री इन तीनों में वृद्धि करके प्रभावी मांग में वृद्धि करने पर जोर देता है वहीं भगवान महावीर अर्थशास्त्र के आधार में इन तत्त्वों के अतिरिक्त सुविधा, आसक्ति, विलासिता व प्रतिष्ठा को भी सम्मिलित करते हैं। उनके अनुसार व्यक्ति अधिक सुविधा प्राप्त करने के लिए धन का संग्रह करता है साथ ही विलासितापूर्ण वस्तुएँ खरीदने, अपने अहम् की सन्तुष्टि करने एवं विज्ञापन के द्वारा भौतिक पदार्थों की हुई आसक्ति को पूरा करने के लिए भी धन का संग्रह करता है। भगवान महावीर इन्हें नियन्त्रित करने का उपदेश देते हैं। एक ओर जहाँ आधुनिक अर्थशास्त्री अनियन्त्रित इच्छा को विकास के लिए प्रोत्साहन मानते हैं एवं आवश्यकता व मांग को असीम विस्तार देना चाहते हैं वहीं भगवान महावीर अच्छा आवश्यकता एवं मांग को सीमित रखने के पक्ष में थे। उन्होंने इच्छा, हू, आगासमा अणंतया अर्थात् इच्छा आकाश के समान अनन्त है, का उपदेश दिया एवं अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति को आवश्यक बतलाया। परन्तु वे विलासितापूर्ण आवश्यकताओं को सीमित करने के पक्ष में थे। यदि वर्तमान संदर्भ में देखा जाए तो बढ़ती आवश्यकताओं ने ही तीव्र मुद्रा-स्फीति को जन्म दिया है एवं धन के लोभ के चलते समाज में अनेकों समस्याएँ पैदा हो

रही है। ऐसे समय में विलासितापूर्ण आवश्यकताओं को सीमित रखने का भगवान महावीर का उपदेश निश्चय ही सम्पूर्ण समाज के लिए हितकर कहा जा सकता है।

निष्कर्ष–उपरोक्त तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए यह कहा जा सकता है कि हालांकि भगवान महावीर कोई अर्थशास्त्री नहीं थे और न ही उन्होंने अर्थशास्त्र विषय पर कोई व्याख्यान दिए थे परन्तु फिर भी उनके चिन्तन में अर्थशास्त्र की गूढ़ समस्याओं का समाधान मिलता है। उपभोग के संदर्भ में भगवान महावीर के द्वारा दिए गए नियन्त्रित उपभोग के सिद्धान्त की वर्तमान समाज को आत्मसात करने की अत्यधिक आवश्यकता है। वर्तमान में बढ़ते उत्पादन के साथ पर्यावरण प्रदूषण एवं स्वयं के लाभ के लिए हानिकारक वस्तुओं का बढ़ता हुआ उत्पादन भी समाज के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे समय उत्पादन में शुद्धता का भगवान महावीर का उपदेश जन-जन के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा। इतना ही नहीं भगवान महावीर ने विनिमय में मापतौल, मिलावट आदि के बारे में जो विचार दिए वे हजारों साल पश्चात् भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बने हुए हैं। इसके अतिरिक्त भगवान महावीर के द्वारा दिए गए विभिन्न अन्य उपदेश भी वर्तमान अर्थशास्त्रिय अध्ययन में महत्त्वपूर्ण उपयोगिता रखते हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि भगवान महावीर के आर्थिक विचारों का अध्ययन एवं उनका प्रचार-प्रसार करने की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि ये विचार एक आध्यात्मिक पुरुष द्वारा दिए गए हैं। इस कारण इसका प्रभाव समाज पर अन्य विचारों की तुलना में अधिक होगा क्योंकि भारतीय समाज मूल रूप से धार्मिक समाज है।

इस प्रकार यदि पुरातन जैन साहित्य का गहन अध्ययन किया जाए तो यह तथ्य सामने आता है कि यद्यपि भगवान महावीर ने पृथक से कोई अर्थशास्त्र के सिद्धान्त नहीं दिए थे परन्तु उनके द्वारा दिए अनेक प्रवचनों का अध्ययन करने पर अर्थशास्त्र के गूढ़ रहस्यों से पर्दा उठता है एवं उनमें से अनेकों सिद्धान्त वर्तमान समय तक अत्यन्त प्रभावशाली है।

संदर्भ ग्रन्थ :-

1. आध्यात्म रहस्य (हिन्दी व्याख्या सहित) : पं. आशाधर, सम्पादक-पं. जुगलकिशोर मुख्तार, प्रकाशक-वीर सेवा मन्दिर, दिल्ली सन् 1957
2. आगम युग का जैन दर्शन : पं. दलसुख मालवणिया, सम्पादक-विजयमुनि शास्त्री, प्रकाशक-सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा, प्रथम प्रवेश, जनवरी, 1966
3. जिन्दगी का सच : मुनि सुधासागर जी, प्रकाशक-भगवान ऋषभदेव ग्रन्थमाला, जयपुर, द्वितीय संस्करण
4. जैन कर्म सिद्धान्त : अध्यात्म और विज्ञान : डॉ. एन.एल. कछारा, प्रकाशक-धर्म दर्शन विज्ञान शोध एवं सेवा संस्थान, सागवाड़ा (राज.) 2003
5. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य, अ.भा.दि. जैन विद्वव् परिषद्, प्रथम संस्करण, 1974
6. भारतीय आर्थिक चिन्तन : डॉ. एम.एल. छीपा, शंकर लाल शर्मा, जे.के. सिद्ध, प्रकाशक-कॉलेज बुक हाउस, जयपुर, 2007
7. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान : डॉ. हीरालाल जैन, प्रकाशक-म.प्र. शासन साहित्य परिषद्, भोपाल, सन् 1962
8. वर्धमानचरित परिशीलन : डॉ. पूनम शुक्ला, सम्पादिका-डॉ. अंजुबाला, प्रकाशक-ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2007
9. समाज विज्ञान (नितिवाक्याकृतम् की विस्तृत वैज्ञानिक, समीक्षात्मक टीका) : आचार्य कनकनन्दी जी, प्रकाशक-धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान, बड़ौत, 2006